Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-2 (July-Dec.) 2025 : Page No.-170-174

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-2 (July-Dec.) 2025
Page No- 170-174

©2025 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

वेदप्रकाश भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

Corresponding Author :
वेदप्रकाश भारती
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा.

रमाशंकर यादव विद्रोही की कविता और सामाज

शोध सारांश : रमाशंकर यादव विद्रोही अपनी कविताओं के जरिए एक समतामूलक समाज के निर्माण करना चाहता है। हजारों सालों से वर्चस्ववादी सत्ता के अमानवीय अत्याचार और शोषण का शिकार होकर अपना अस्तित्व को खो चुका है जिसे विद्रोही नयी दुनिया में इसकी आजादी शिक्षा अभिव्यक्ति के साथ रहने और जीने के लिए निरंतर प्रयासरत है। विद्रोही अच्छी तरह जानते हैं कि व्यवस्था परिवर्तन ही वह प्रक्रिया है, जिससे शोषण मुक्त समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। विद्रोही ईश्वर, धर्म, छल-कपट, पाप-पुण्य, शोषण-दमन, जातिवाद, अंधविश्वास से भरी दुनिया से अलग एक नई दुनिया बनाना चाहते हैं जहाँ केवल मनुष्य हों और मनुष्यता हो।

"खोद कर गाड़ दूँगा मैं भगवान को
रब्बियों नब्बियों का मैं सिर काट दूँगा
ये बहारों के दिन हैं महक लेने दो
अपने हक के लिए हमको लड़ लेने दो
भाड़ में जाए तेरी दुनिया खुदा
एक दुनिया नयी हमको गढ़ लेने दो।
जहाँ आदमी, आदमी की तरह
रह सके, कह सके, सुन सके, सह सके
मौत जाए बहक तो बहक जाने दो
जिंदगी ताकि आगे बहक न सके।"[1]

बीज शब्दः- समाज दुनिया, परिवर्तन, स्त्री, अस्तित्व, मनुष्य, मानवता।

रामाशंकर यादव विद्रोही का जन्म 3 दिसंबर 1957 को सुल्तानपुर जिले के अहिरी फिरोजपुर में हुआ। इनका पहचान 'विद्रोही' नाम से है और एक क्रांतिकारी कवि के रुप में है। विद्रोही जी क्रांतिकारी, प्रगतिशील चेतना के कवि और कबीर के परंपरा के कवि हैं। वह सुल्तानपुर से स्नातक किये और फिर जेएनयू स्नातकोत्तर करने गए। 1983 में छात्र आंदोलन में भाग के बाद उन्हें जेएनयू से बाहर निकाल दिया गया फिर भी विद्रोही स्वभाव से विद्रोही ठहरे और फक्कड़ अंदाज में जिंदगी जीने वाले। वो आजीवन जेएनयू में ही जमे रहे,

जेएनयू के छात्रों के आंदोलन में हिस्सेदारी करने के दौरान 8 दिसंबर 2015 को उनका निधन हो गया और वो सदा के लिए जेएनयू में अमर हो गये। रमाशंकर यादव विद्रोही के रक्त में ही आंदोलन भरा हुआ था, विद्रोही जैसा शख्सियत धरती पर विरले ही पैदा होते हैं। जेएनयू के जंगलों, गलियों, पगडंडियों में रहकर कविता लिखते रहे और समाज एवं मानव विरोधी भावनाओं एवं वर्चस्ववादी, सामंती व्यवस्था तथा पितृसत्ता के खिलाफ अपना स्वर बुलंद करते रहे। रमाशंकर विद्रोही कबीर की मौखिक परंपरा को अपनाकर वो मन में ही वो रचना किये। विद्रोही अपनी रचनाओं में सामंती, तानाशाही, दमन, शोषण, अत्याचार एवं समाज के हाशिये पर मौजूद लोगों के उत्पीड़न के खिलाफ जिंदादिली से आवाज बुलंद करते रहे। विद्रोही गुलामी की अंतिम हदों तक लड़ने की बात करते है। विद्रोही कहते हैं कि

"इस ज़माने में जिनका ज़माना है भाई
उन्हीं के ज़माने में रहते हैं हम
उन्हीं की हैं सहते, उन्हीं की हैं कहते
उन्हीं की खातिर दिन–रात बहते हैं हम।
यह उन्हीं का हुक्म है जो मैं कह रहा हूँ
उनके सम्मान में मैं कलम तोड़ दूँ
ये उन्हीं का हुकूम है, सबक लिए और मेरे लिए
कि मैं हक छोड़ दूँ।
लोग हक छोड़ दें पर मैं क्यों छोड़ दूँ
मैं तो हक की लड़ाई का हमवार हूँ
मैं बताऊं कि मेरी कमर तोड़ दो, मेरा सिर फोड़ दो
किंतु ये न कहो कि हक़ छोड़ दो।
कि इस हक की लड़ाई में तुम किस तरफ़ हो।
आपसे कह रहा हूँ अब अपनी तरह
कि मैं सताए हुओं की तरफ हूँ
और जो भी सताए हुओं की तरफ है
उसको समझता हूँ कि अपनी तरफ है
हम गुलामी की अंतिम हदों तक लड़ेंगे....."[2]

विद्रोही का कविता सुनाने का अंदाज बिल्कुल ही अलग था, वो कभी पढ़कर नहीं बल्कि हमेशा हमेशा उनके होठों पर ही कविता याद रहता था। यही कारण है कि वह बहुत लोकप्रिय भी रहे। 2011 की रचनाओं का संग्रह 'नई खेती' प्रकाशित हुआ। विद्रोही अपने पत्नी से भी बहुत प्रेम करते थे, विद्रोही जी कहते हैं कि "मैं अपना तेवर बरकरार रख पाया क्योंकि शांति (पत्नी) ने पारिवारिक जिम्मेदारी से मुझे मुक्त रखा।" विद्रोही आंदोलन के बीच रहते थे, जीते थे। इनकी कविताएं पूंजीपति, शोषण और दमन करने वालों पर सीधा प्रहार करती है। किसान, मजदूर, छात्र, स्त्रियां आदि के दर्द को कविताओं में जगह दिया। उन्होंने सामाजिक अन्याय, राज्य दमन जाति पाँति व्यवस्था, आर्थिक असमानता, पाखंड आदि विषयों पर कविता की। विद्रोही अपने व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में खुद ही कहते हैं-

"आग भड़काने के पीछे अपना ही घर फूँक डालें
सोचिएगा मत कि खाली शायरी करते है"

विद्रोही की इन बातों से बरबस यहाँ कबीर याद या रहे है। कबीर भी लुकाठी लेकर बाजार से लोगों को आह्वान करते थे और कहते थे कि जो व्यक्ति अपने मन के अहंकार और मोह-माया को जलाने के तैयार है एवं इस संसार को बेहतर बनाना चाहते है। वो हमारे साथ चले। कबीर कहते थे- "कबीर खड़ा बाजार में लिए लुकाठी हाथ। जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ।।"

विद्रोही इस संसार से झूठ, मिथक, पाखंड, वर्चस्ववादी परंपरा को खत्म कर देना चाहते है। समाज और आदमी को बांटने वाली धर्म सत्ता को इस जमीन से उखाड़ फेंकना चाहते है। 'नई खेती' शीर्षक में खेती नाम मात्रा है बल्कि आप इसको दुनिया के रूप में देख सकते हैं, यानी एक नई दुनिया ऐसी दुनिया जहां शोषण, दमन उत्पीड़न, गुलामी ना हो बल्कि अमन, चैन, भाईचारा भरा संसार हो जिसमें इंसान इंसान के रूप में रहे। इसलिए विद्रोही कहते है-

"मैं किसान हूं,
आसमान में धान हो रहा हूँ
कुछ लोग कह रहे है कि,
पगले आसमान में धान नहीं जमता, मैं कहता हूं कि
गेगले घोघले अगर जमीन पर भगवान जम सकता है
तो मैं आसमान में धान भी जम सकता है
और अब तो, दोनों में एक होकर रहेगा

या तो जमीन से भगवान उखड़ेगा
या आसमान में धान जमेगा।"[3]

विद्रोही अपनी कविताओं में स्त्रियों पर वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक हो रहे अत्याचार, शोषण, दमन, इत्यादि को बखूबी दर्ज करते हैं। वो औरतों में शीर्षक कविता में कहते हैं, औरत की स्थिति के बारे में लिखा है। इनपे लगने वाले प्रतिबंधों के खिलाफ क्या भावुक और जोरदार तर्क के साथ कविता कहते हैं-

"औरतें रोती जाती है मर्द मरते जाते हैं
औरतें और रोती है मर्द और मरते हैं
औरतें खूब जोर से रोती है मर्द इतनी जोर से मारते हैं
कि वह मर जाती हैं"[4]

भारतीय समाज में खासकर औरत पर पुरजोर अत्याचार किया गया है। औरत पर किए गए जुल्म और दमन शोषण का एक लंबा इतिहास है उसी इतिहास में हुए जुल्म को कविताओं मे जगह देते है। विद्रोही को सिर्फ इतिहास की चिंता नहीं है उसे आने वालें समय में होने वाले जुल्म और अत्याचार की भी फिक्र है। इसलिए विद्रोही अपनी कविताओं में इसे दर्ज करते है और कहते है-

"इतिहास में वह पहली औरत कौन थी
जिसे सबसे पहले जलाया गया
मैं नहीं जानता लेकिन जो भी रही हो
वह मेरी मां रही होगी
मेरी चिंता यह है कि भविष्य में
वह आखरी स्त्री कौन होगी
जिसे सबसे अंत में जलाया जाएगा
मैं नहीं जानता लेकिन जो भी होगी मेरी बेटी होगी
और मैं यह होने नहीं दूंगा"[5]

यह कविता विद्रोही जी की लंबी कविताओं में से एक कविता है। इस कविता के अंतर्गत विद्रोही जी अपने उपस्थिति दर्ज कराते हैं साथ ही मनुष्य एवं प्रगतिशील इंसान होने का कर्तव्य के साथ वो जिंदा आदमी होने का भी प्रमाण देते हैं। इस कविता में हुई वे आगे इस तरह लिखते है

"कुछ औरतों ने अपनी इच्छा से
कुएं में कूद कर जान दी थी
ऐसा पुलिस के रिकॉर्ड में दर्ज है
और कुछ औरतें चिता में जलकर मरी थी
ऐसा धर्म की किताबों में लिखा हैं"[6]

औरत के हत्या को झुठलाकर उसे आत्महत्या का नाम दे दिया गया। औरतों के साथ जुल्म सिर्फ पितृसत्ता व्यवस्था के पोषक पुरुषों ने किया और औरतों पर जुल्म करने के लिए शासन व्यवस्था के साथ-साथ यहाँ के पोथी-पुरान ने भी स्वीकृति दिया है। स्त्री की हत्या पुलिस के भी रिकॉर्ड में भी दर्ज है और धर्म के किताब में भी। औरत की हत्या, हत्या न लगे उस पर कोई सवाल ना करें, हत्यातारा पर कोई कार्यवायी ना हो और उसका मुंह बंद कर दिया जाता है और उसे आत्महत्या करार दे दिया जाता है। जबकि धर्म के किताबों में भी लिख दिया यानि औरत का शोषण करने के लिए हर तरफ से हथकंडा अपनाया गया है। पुरुष हो धर्म हो और शासन हो सभी औरत का शोषण करता आया है और अत्याचार भी। विद्रोही समाज को और प्रगतिशील मानवों को एक चमकता हुआ आईना दिखते हैं। पुरुषों के द्वारा धार्मिक किताबों में लिख दिया गया है कि स्त्री को आजाद नहीं करना है बल्कि उसे गुलाम बनाकर रखना है। यदि कोई सवाल करने लगे, हक और अधिकार की मांगने लगे तो उसकी हत्या कर दिया जाता है एवं हमेशा के लिए उसका मुंह बंद कर दिया जाता या फिर उसे और उसे आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया जाता है एवं उसे आत्महत्या का नाम दे दिया जाता है। धर्म ग्रंथ में ऐसा जिक्र है कि वह कभी आजाद ना हो और वह सदा गुलाम ही रहे। पितृसत्तात्मक व्यवस्था समाज में हमेशा बरकरार रहे और पुरुषों का वर्चस्व सदा बना रहे। कोई भी स्त्री या कोई भी इंसान बेवजह आत्महत्या नहीं करता। कवि कल्पना के ही सहारे मगर उन सभी औरतों को न्याय दिलाने की बात करते हैं जिन पर सदियों पहले अत्याचार और शोषण का शिकार हुआ और जिसकी हत्या किया गया और उसे दबा दिया गया। कवि कहते हैं कि

"मैं उन औरतों को
जो कुएं में कूदकर या चिता में जलकर मरी है

फिर से जिंदा करूंगा, और उनके बयानात को
दोबारा कलम बंद करूंगा,
कि कहीं कुछ छूट तो नहीं गया
कि कहीं कुछ बाकी तो नहीं रह गया
कि कहीं कोई भूल तो नहीं हुई"[7]

वर्तमान समय पूंजीवाद का समय हो गया है हर किसी पर बाज़र्वद का असर हो गया है। इस पूंजीवादी समाज में इंसान का मूल्य घट रहा है और वस्तु का मूल्य बढ़ रहा है। इस पूंजीवादी समाज में और इस पितृसत्तात्मक, सामंती समाज में दलाल औरत के तन को बेचकर खाता है और अपना जीवन-यापन चलता है। इस धंधा और दलालों को देखकर चिंता जाहिर करते हैं। वह कहते हैं कि-

"लेकिन पूंजीवादी समाज की चौपालों!
और सामंती समाज के दलालों!
औरत का तन और मुर्दे का कफन
बिकता देखकर, मेरे प्यार का सोता सूख गया
मेरे प्रेम का दुर्वाकुर मुरझा गया"[8]

विद्रोही का प्रेम करने का अंदाज भी निराला है। वो अपने साथ जीवन साथी को इन बदलाव की क्रांति में जीवनसाथी को साथ देखता है। वो उसकी सुंदरता से नहीं बल्कि समाज को बदलने की जो विचार है, जिसमें गरीब शोषित पीड़ित उत्पीड़ित लोगों के हक और अधिकार दिलाने की बात में साथ है, जो अन्याय अत्याचार शोषण के खिलाफ आवाज को बुलंद कर रहा है। कवि प्रेम के बारे में भी कहते हैं कि वह क्यों अपने प्रेमी से प्यार करते हैं। विद्रोही कहते है-

"मैं तुम्हें इसलिए प्यार नहीं करता
कि तुम बहुत सुंदर हो, और तुम मुझे अच्छी लगती हो
मैं तुम्हें इसलिए प्यार करता हूं,
कि जब तुम्हें देखता हूं
तो मुझे लगता है की क्रांति होगी"[9]

विद्रोही का कहना है कि स्त्री को सुंदर चेहरा लेकर सिर्फ आम लोगों की तरह जीना-मरना नहीं बल्कि क्रांति करने के लिए कहते हैं उन्हें देखकर कवि को लगता है कि अब क्रांति होगी उसे क्रांति का ये हिस्सेदार बनेगी और सामाजिक परिवर्तन में अपना भागीदारी निभायेगी।

विद्रोही जी औरत की आजादी और उन पर हुए जुल्म के लिए बहुत ही ज्यादा चिंतित है एवं सचेत हैं। हर स्थिति में हर जगह पर कवि आगे लिखते हैं कि 'मोहनजोदड़ो की आखिरी सीढ़ी से' कविता में वो लिखते हैं और अपने पाठक को सचेत करते हुए इतिहास की बात करते हैं तथा बताते हैं कि कैसे उन पर प्राचीन सभ्यता से ही औरतों पर जुल्म किए गये हैं। न्याय के कटघरे में खड़े होकर वो प्रकृति के साथ मनुष्य से भी उसकी गवाही देने के लिए कहते हैं-

"प्राचीन सभ्यताओं के मुहाने पर
एक औरत की जली हुई लाश मिलती है
और इंसानों की बिखड़ी हुई हड्डियाँ मिलती है
****
एक औरत जो माँ हो सकती है
बहन हो सकती है, बीवी हो सकती है
बेटी हो सकती है, मैं कहता हूं, तुम हट जाओ मेरे
सामने से
मेरा खून कलकला रहा है, मेरा कलेजा सुलग रहा है
मेरी देह जल रही है, मेरी मां को मेरी बहन को
मेरी बीवी को मेरी बेटी को मारा गया है
मेरी पुरखिने आसमान में आर्तनाद कर रही है
मैं इस औरत की जली हुई लाश पर
सर पटक कर जान दे देता, अगर मेरी बेटी ना होती तो
और बेटी कहती है, पापा तुम बेवजह ही
इतना भावुक होते हो
हम लड़कियां तो लकड़ियाँ होती हैं
जो बड़ी होने पर चूल्हे में लगा दी जाती है"[10]

वर्तमान दौर में भी कैसे लड़कियों को लड़कियां नहीं बल्कि लकड़ियाँ समझा जाता है और उसे किस परकर से दहेज की लालच में आकार उसे जिंदा जला दिया जाता है। भारतीय समाज पितृसत्ता की सोच के लिए विद्रोही दंत कथाओं में भी सेंध लगाते हैं और वे पितृसत्ता की स्थापना को ढूंढ़ भी लेते हैं। विद्रोही कहते है-

"इतिहास में पहली स्त्री हत्या
उसके बेटे ने अपने बाप के कहने पर की
जमदग्नि ने कहा कि ओ परशुराम!

मैं तुमसे कहता हूं कि अपनी मां का बध कर दो
और परशुराम में कर दिया
इस तरह पिता पुत्र का हुआ, और पितृसत्ता आई"[11]

विद्रोही धार्मिक पात्रों के जरिए ही सही कैसे पुरुष हमेशा अपना पुरुषवादी सोच को अपने समाज में स्त्रियों पर कायम रखा है। स्त्रियों को सदियों से सदियों तक गुलाम बनाकर रखा, समाज में पितृसत्ता को कायम रखने के लिए निर्दोष स्त्री की हत्या किया। विद्रोही आसान और साफ शब्दों में लिखा है कि कैसे समाज में पितृसत्तात्मक कायम हुई पिता पुत्र का आदेश देता है और पुत्र उसके आदेश को पालन करते हैं और आदेश का पालन करते हुए मां की हत्या कर देता है। यह घटना भले सदियों पुरानी है मगर आज भी यह समाज में व्याप्त है और पितृसत्ता कायम है। हर सभ्यता के मुहाने पर एक औरत की जली हुई लाश और इंसानों की बिखरी हुई हड्डियां है। 'गुलाम' शीर्षक कविता में लिखते है-

"हर जगह ऐसी ही जिल्लत, हर जगह ऐसी जहालत
हर जगह पर है पुलिस, हर जगह पर है अदालत
हर जगह पर है पुरोहित, हर जगह नरमेघ है
हर जगह कमजोर मारा जा रहा है, खेद है
शूलियाँ ही हर जगह पर है निजामों की निशान
हर जगह पर फाँसियां लटकाए जाते हैं गुलाम
हर जगह औरत को मारा पीटा जा रहा है
जिंदा जलाया जा रहा है, खोदा गाड़ा जा रहा है
हर जगह पर खून है और हर जगह आंसू बिछे हैं"[12]

भारतीय समाज में वर्तमान में भी औरत को गुलाम की तरह रखते हैं। समाज में औरत गुलाम की तरह जीते हैं और रहते हैं।स्त्री के साथ भी किस प्रकार का दुर्व्यवहार किया जाता है और उनके साथ कैसे-कैसे सौतेला व्यवहार किया जाता है। कवि समाज में हुए हर जगह खून को पहचान करते है और उसको अपनी कविताओं में दर्ज करते है और इसे पाठकों एवं बुद्धिजीवियों को सूक्ष्मता से देखने का भी नजरिया देते है तथा हर समय या हर जगह हुए खून पर सोचने के लिए मजबूर भी करते है।

निष्कर्ष : विद्रोही कवि ही नहीं बल्कि वह इतिहासबोध एक सभ्यता के रूप में है। वो उस सभ्यता को बचाने की बात करते हैं और इसके लिए वो लिखते भी हैं। विद्रोही कहते हैं कि "तुम वे सारे लोग मिलकर मुझे बचाओ/जिसके खून से गारे से/ पिरामिड बने, मीनारे बने, दीवारें बनीं।"[13] विद्रोही की कविताएं सवाल करती है, तर्क करती है, और जवाब भी देती है।

संदर्भ सूची :

1. रमाशंकर यादव विद्रोही, नयी खेती, नवारुण, गाजियाबाद, 2018, पृ. 85
2. वही पृ. 161
3. वही पृ. 35
4. वही पृ. 41
5. वही पृ. 41
6. वही पृ. 39
7. वही पृ. 40
8. वही पृ. 129
9. वही पृ. 130
10. वही पृ.49,50
11. वही पृ. 51
12. वही पृ.55,56
13. वही पृ. 53

•